बहता पानी निर्मला, बंधा गंदला होय

डॉ. एम. डी. थॉमस

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक कृति गोतांजलि मं एक अनोखी प्राथना है। हे प्रभु! तू यदि हमशा एव ही रूप मं मरे सामने प्रकट होगा, तो हो सकता है मं ऊब जाऊँ, और तुझे देखने की मरी ख्वाहिश ही खत्म हो जाए। इसलिए तुझसे मरी गुजारिश है कि तू रोज हर पल नए-नए रूपों मं मरे जीवन मं आ। इस प्राथना का भाव है सदा नये पन की तलाश, सदा उसकी इच्छा।

अजीब बात है कि साहित्य मं और धर्म मं हम हमशा नएपन की बात करते हैं, उसकी सराहना करते हैं। लेकिन सामाजिक जीवन मं उसे हतोत्साहित करते हैं। हम बदलाव का विरोध करते हैं, नए विचारों की अनदेखी करते हैं, और नए नेतृत्व को कुचलने की कोशिश करते हैं। हम उस नयेपन की अनुभवहीनता के नाम पर कुबान कर देते हैं, जिसकी ललक सम्ची प्रकृति मं पाइं जाती है। जिस प्रकार पड़-पौधों मं नइं-नई कोपलें फूटकर निकलती हैं, ठीक उसी प्रकार युवाओं मं नये-नये विचार और नये-नये भाव उभरते रहते हैं। नयेपन की तलाश युवाओं का केन्द्रीय भाव है। युवा नयेपन का जीवन्त प्रतीक है। उनमं नइं ऊजा और नइं लगन होती है। उनमं नये ढ़ंग से जीने की इच्छा, कुछ नया जानने की इच्छा, जमाने से अलग कुछ कर डालने की इच्छा होती है। उनके इस नयेपन को, इस उत्साह और जोश को सही अभिव्यक्ति मिले, यह उनका बनियादी हक है। और मानव समाज को आगे बढ़ने के लिए उनके इस नयेपन की बहद जरूरत है।

हमारे समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा युवाओं का है। बावजूद इसके, समाज को चलाने मं युवाओं की सहभागिता बहुत ही कम है। आजकल अनेक राजनीतिक दलों की युवा शाखाएं बनी हुइं हैं। कइं समदायों मं युवा संगठनों का सक्रिय रूप भी देखने को मिलता है। फिर भी उनमं नयापन नहीं दिखता, रचनात्मकता नहीं दिखती। युवाओं के नयेपन का सकारात्मक असर सामाजिक जीवन पर हो, कानून और नीतियों पर हो तथा प्रशासन पर हो — इसके लिए व्यवस्था बदलनी होगी।

संगीत की दुनिया मं स्वरों के आरोह और अवरोह होते हैं। जैसे आरोह और अवरोह दोनों मिलकर राग-रागिनियाँ बनाते हैं, ठीक उसी तरह सामाजिक ज़िन्दगी भी आरोह और अवरोह का मिला-जुला रूप है। बड़े-बढ़ों की ज़िन्दगी आरोह की सीढ़ियाँ चढ़ चुकी है और अब या तो स्थिर हैं या अवरोह की ओर हैं। उनका ज्ञान और ज़िन्दगी का तजुबा समाज के लिए अमल्य धरोहर है। समाज को सुचारू रूप से चलाने मं बजुगों की कुशलता, अनुभव और जिम्मदारी पर बहस की कोइं गुंजाइश नहीं है। लेकिन इसके बावजूद समाज के निमाण मं युवाओं की सहभागिता इससे बढ़कर होती तो आज हमारे समाज का रूप भी कुछ और बहतर होता। भारत मं एक मशहूर सन्त कवि हुए दादू दयाल, उनकी दो पंक्तियाँ हैं —

पूरन ब्रह्म विचारिए तब सकल आत्मा एक।
काया का गुण देखिए तब नाना बरन अनेक।।

मतलब है शरीर के स्तर पर अनेकता है और आत्मा के स्तर पर एकता। एक पहलू पर ध्यान केंन्द्रित करने से बिखराव आता है और सम्पूर्ण पर विचार किए जाने से आत्माएं आपस मं जुड़ जाती हैं। इसलिए शरीर के स्तर से ऊपर उठकर आत्मा के स्तर पर सोचना चाहिए। बड़े-बढ़े लोग आखिरी साँस तक अपने परिवार, संस्था, समदाय और देश को अपनी मट्ठी मं बाँधे रखकर उसका फायदा भोगने की कोशिश मं रहते हैं और युवा पोढ़ी को साथ लेकर उसे नेतृत्व मं सक्षम बनाने मं कम दिलचस्पो लेते हैं। कबोर ने यह सब दखकर कहा था —

बहता पानी निमल, बंधा गंदला होय। साधु जन रमता भल, दाग न लागे कोय।।

धर्म और इन्सानियत साप--सुथरे रहें, उसके लिए नेतृत्व को भी हर क्षण बहते पानी के समान हर पल नया और गतिमान रहना चाहिए। सामाजिक जीवन मं समरसता लाने का यही है गुरुमंत्र।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS